रमज़ान का महीना दाख़िल होने के आदाब

रमज़ान का महीना दाख़िल होने के आदाब :- रमज़ान के महीने के चाँद का ख़्याल रखना सुन्नत है और कुछ ने इसे वाजिब जाना है। जब चाँद देखे, तो चाँद की तरफ इशारः करे, क़िबले की तरफ मुँह करके खड़ा हो और हाथ उठाकर कहे :-

"रब्बी व रब्बोकल्लाहो रब्बुल आलामीन अल्लाहुम्मा अहिल्लहू अलैना बिल अम्ने वलईमान वस्सलामाते वल इस्लाम वल मुसाराआते इला मा तोहिब्बो व तरज़ा अल्लाहुम्मा बारिक लना फी शहरेना हाज़ा वर ज़ुक़ना ख़ैरह व औनहू वस्रिफ अन्ना ज़र्रह व शर्रह व बलाअहू व फित्नातह।"

{अर्थात् मेरा और तेरा परवर्दिगार वही अल्लाह है, जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है, ख़ुदावन्दा ज़ाहिर कर इस चाँद को हमारे ऊपर अम्न व ईमान और सलामती और इस्लाम और तेरे महबूब व पसन्दीदः अअमाल और अफआल की तरफ तेज़ी करने के साथ। ख़ुदावन्दा हमें बरकत दे, इस महीने में और हमें अता कर (दे) इसकी बेहतरी और इसकी इमदाद और दूर कर हमसे इसका नुक़सान और इसकी ख़राबी और इसकी मुसीबत और इसकी आज़माइश।}

और बेहतरीन दुआ सहीफः-ए-कामेलः की दुआ है जो इमाम ज़ैन-उल-आबिदीन (अ॰) की दुआओं का संग्रह है, वह पढ़े। जो हर महीने का चाँद देखने के वक़्त पढ़ी जाये।

रमज़ान की पहली रात जिमाअ (मैथुन, संभोग) करना और ग़ुस्ल करना सुन्नत (पुनीत) है। ग़ुस्ल बहती हुई नहर में करे और तीस चुल्लू सर पर पानी डाले, तो इससे उस साल बदन में खुजली नहीं होगी। पहली रात इमाम हुसैन (अ॰) की ज़ियारत पढ़ना सुन्नत है और जो पन्द्रह की रात और आख़िरी रात में ज़ियारत पढ़े, तो उसके गुनाह इस तरह ख़त्म होंगे, जिस तरह पेड़ से पत्ते गिरते हैं और गुनाहों से इस तरह बाहर आयेगा, जैसे अभी-अभी अपनी मां के पेट से पैदा हुआ हो और कोई गुनाह न किया हो, और ख़ुदा हज व उमरे का सवाब देगा।

www.IslamInHindi.org

अनुमति : **अब्बास बुक एजेंसी** द्वारा प्रकाशित **"तोहफतुल-अवाम"** से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान का महीना दाख़िल होने के आदाब

पहली रात ही पूरे महीने के रोज़ों की निय्यत करे और फिर हर रात निय्यत करे, तो बेहतर है और निय्यत इस तरह करे कि "कल माह-ए-रमज़ान का रोज़ः रखता हूँ अदा वाजिब कुरबतन इलल्लाह।" पहले दिन भी सुन्नत है कि आब-ए-जारी (अर्थात् बहते हुए पानी, इसका वर्णान पहले हो चुका है) में गुस्ल करे और तीस चुल्लू पानी सर पर डाले, तो पूरे साल हर तरह की बीमारीयों और दर्द से बचा रहेगा। यह भी मिलता है कि जो पहले दिन एक चुल्लू गुलाब का पानी मुहँ पर डाले, वह लज्जा, शर्मिन्दगी और संकोच से बचा रहेगा और अगर हर रोज़ इसी तरह करे, तो उस दिन बलाओं से बचा रहेगा और उस साल सरसाम (एक दिमाग़ी) बीमारी से महफूज़ रहेगा और लिखा है कि पहले दिन यह दुआ पढ़े :-

"अल्लाहुम्मा क़द हज़ारा शहरो रमज़ान व क़दिफ़्तरज़्ता अलैना सेयामाहू व अन्ज़ल्ता फीहिल कुर्आन होदल्लिन्नासे व बय्येनातिन मेनल्होदा वल फुर्क़ान अल्लाहुम्मा आइन्ना अला सेयामेही व ताक़ब्बलहो मिन्ना व तसल्लम्हो मिन्ना व सल्लिमहो लना फी युसरिन मिनका व आफ़ेयातिन इन्नाका अला कुल्ले शैइन क़दीर।"

{यानी खुदावन्दा आ गया रमज़ान का महीना और तूने वाजिब किये हैं हमपर रोज़े और नाज़िल किया है, तूने इसमें कुर्आन इस हालत में कि हिदायत है लोगों के लिए और खुली हुई निशानीयाँ रखता है, हिदायत और फैसले की। खुदावन्दा हमारी मदद कर इसके रोज़ों पर और कुबूल कर इस अिबादत को हमसे और सहीह सलामत इसको ले, हमसे और इसको हमारे लिए करार दे, सलामती के साथ अपनी तरफ से आसानी और खैरियत के साथ। तू हर बात पर कादिर है।}

मनकूल है कि जब रमज़ान का महीना आता था, तो रसूल-ए-खुदा (स०) यह दुआ पढ़ते थे :-

"अल्लाहुम्मा इन्नाहू क़द दख़ाला शहरो रमज़ान अल्लाहुम्मा रब्बा शहरे रमज़ानल्लज़ी अन्ज़ल्ता फीहिल कुर्आन व जाअलताहू बय्येनातिन मेनल होदा वल फुर्क़ान अल्लाहुम्मा फाबारिक लना फी शहरे रमज़ान व आइन्ना अला सेयामेही व सलातेही व ताक़ब्बलहो मिन्ना"

{यानी खुदावन्दा यह रमज़ान का महीना है कि जो आ गया है। ए खुदा-ए-परवर्दिगार रमज़ान के महीने के जिसमें तूने कुर्आन नाज़िल किया और करार दिया इस को खुली हुई निशानी हिदायत की और हक़ व बातिल के फर्क की। खुदा वन्दा अब तू बरकत अता कर, हम को रमज़ान के महीनों में और मदद कर हमारी उसके रोज़े और नमाज़ पर और उसको कुबूल कर हमसे।}

फर्माया जो पहली रात या पहले दिन दो रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

में सूरः-ए-अल्हम्द के बाद सूरः-ए-इन्ना फातहना दूसरी रकअत में जो सूरः चाहे पढ़े, तो खुदा उस साल की सब परेशानीयों व बलाओं, मुसीबतों और बुराईयों से महफ़ूज़ रखेगा। रोज़े में इत्र लगाने और मंजन लगाने से कोई नुक़सान नहीं होता।

www.IslamInHindi.org
अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990